SNBP International & Senior Secondary School, Chikhali, Pune.
Affiliation No. 1130703
Academic session 2024-25
Class Notes/Term 2

CLASS -6 **SUBJECT: HINDI**

Prepared By: DEEPIKA MEHRA **पाठ १४ - वन के मार्ग में**

Given date - **Prepared date -**

शब्द -अर्थ ;

पुर-नगर , निकसी-निकली, रघुवीर वधू-सीताजी, मग-रास्ता
डग-कदम, ससकी-दिखाई दी, भाल-मस्तक, कनी-बूंदें
पुर-होंठ, केतिक-कितना, पर्णकुटी-पत्तों की बनी कुटिया , कित-कहाँ
तिय-पत्नी, चारु- सुन्दर, च्वै-गिरना, लरिका-लड़का
परिखौ-प्रतीक्षा करना, घरीक-एक घड़ी, समय , ठाढ़े-खड़ा होना, पसेउ - पसीना
बयारि-हवा, पखारिहौं-धोना, भूभुरि-गर्म रेत, कंटक-काँटे
काढ़ना-निकालना, नाह–स्वामी (पति), नेहु-प्रेम, लख्यो-देखकर

प्रश्न.१ नगर से बाहर निकलकर दो पग चलने के बाद सीता की क्या दशा हुई ?

उत्तर-नगर से बाहर निकलकर दो पग अर्थात थोड़ी दूर चलने के बाद सीता जी के माथे पर पसीने की बूंदें झलकने लगीं। उनके कोमल ओठ सूख गए। वे शीघ्र ही थक गईं।

प्रश्न.२ अब और कितनी दूर चलना है, पर्नकुटी कहाँ बनाइएगा'-किसने, किससे पूछा और क्यों ?
उत्तर-अब और कितना दूर चलना है, पर्नकुटी कहाँ बनाइएगा' ये शब्द सीता जी ने श्रीराम से पूछे क्योंकि वे बहुत अधिक थक गई थीं।

प्रश्न.३ राम ने थकी हुई सीता की क्या सहायता की?
उत्तर- राम ने जब देखा कि सीता थक चुकी हैं, तो वह देर तक बैठकर पैरों से काँटे निकालने का अभिनय करते रहे, जिससे सीता को कुछ देर आराम करने का मौका मिल जाए और उनकी थकान कम हो जाए।

प्रश्न.४ दोनों सवैयों के प्रसंगों में अंतर स्पष्ट करो।
उत्तर-हले सवैये में वन जाते समय सीता जी की व्याकुलता एवं थकान का वर्णन है। वे अपने गंतव्य के बारे में जानना चाहती हैं। पत्नी सीता की ऐसी बेहाल अवस्था देखकर रामचंद्र जी भी दुखी हो जाते हैं। जब सीता नगर से बाहर कदम रखती हैं तो कुछ दूर जाने के बाद काफ़ी थक जाती हैं। उन्हें पसीना आने लगता है और होंठ सूखने लगते हैं। वे व्याकुलता से श्रीराम से पूछती हैं कि अभी और कितना चलना है तथा पर्णकुटी कहाँ बनाना है? इस तरह सीता जी की व्याकुलता को देखकर श्रीराम की आँखों में आँसू आ जाते हैं। दूसरे सवैये में श्रीराम और सीता की दशा का मार्मिक चित्रण है। इस प्रसंग में श्रीराम व सीता जी के

प्रेम को दर्शाते हुए कहा गया है कि कैसे श्रीराम सीता के थक जाने पर अपने पैरों के काँटे निकालते हैं और सीता जी श्रीराम का अपने प्रति प्रेम देखकर पुलकित हो जाती हैं।

प्रश्न.५ पाठ के आधार पर वन के मार्ग का वर्णन अपने शब्दों में करो।
उत्तर- वन का मार्ग अत्यंत कठिन था। यह मार्ग काँटों से भरा था। उस पर बहुत सँभलकर चलना पड़ रहा था। रहने के लिए कोई सुरक्षित स्थान नहीं था। रास्ते में खाने की वस्तुएँ नहीं थीं। पानी मिलना भी कठिन था। चारों तरफ सुनसान तथा असुरक्षा का वातावरण था।

भाषा की बात-
१)हिंदी खड़ी बोली है पर भोजपुरी में निम्नलिखित उद्देश्य के लिए अलग क्रिया के साथ 'के' का प्रयोग करते हैं |
देखकर – ताक के

बैठकर – बइठ के।

रुककर – ठहर के।

सोकर – सुत के

खाकर – खा के।

पढ़कर – पढ़ के।

२)मिट्टी का गहरा अंधकार, डूबा है उसमें एक बीज।'
उसमें एक बीज डूबा है। जब हम किसी बात को कविता में कहते हैं तो वाक्य के शब्दों के क्रम में बदलाव आता है; जैसे-"छाँह घरीक वै ठाढ़े" को गद्य में ऐसे लिखा जा सकता है। "छाया में एक घड़ी खड़ा होकर।"
उदाहरण के आधार पर नीचे दी गई कविता की पंक्तियों को गद्य के शब्दक्रम में लिखो।
उत्तर-पुर तें निकसी रघुबीर-बधू,
सीता जी नगर से बाहर वन जाने के लिए निकलीं।

पुट सूख गए मधुराधर वै|
मधुर होठ सूख गए।

बैठि बिलंब लौं कंटक काढ़े।
कुछ समय तक श्रीराम ने आराम किए और अपने पैरों से देर तक काँटे निकालते रहे।